

James Lange theory of Emotion.

संवेग में अनुभव तथा सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं में तीव्र परिवर्तन होते हैं। लेकिन संवेगात्मक अनुभव और संवेगात्मक व्यवहारों के संबंध जानने के लिए मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिकी दोनों के वैज्ञानिकों ने संवेग के कई सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिनमें एक जेम्स लॉज का सिद्धान्त इस प्रकार है। —

जैसा कि नाम से स्पष्ट है इसका प्रतिपादन दो विद्वानों द्वारा हुआ है। जेम्स अमेरिकी मनोवैज्ञानिक था और लॉज डेनमार्क का शारीरिक वैज्ञानिक। उन दोनों के स्वतंत्र रूप से मिलकर 1880 के लगभग अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। चूंकि उनके निष्कर्ष एक दूसरे से मिलते-जुलते थे इसलिए उन्हें एक ही सिद्धान्त के अंतर्गत माना गया। दोनों के नाम पर इस सिद्धान्त को James Lange theory कहा गया।

संवेग के संबंध में हमारी सामान्य धारणा है

James Lange theory ही उसके विपरीत है। सामान्यतः हम यह सोचते हैं कि जब हमें भय लगता है तब हम चिल्लाते या भागते हैं जब हम शोक का अनुभव करते हैं तब हम गलियाँ देते हैं या आँसू बहाते हैं। और जब प्रेम का अनुभव करते हैं तब प्रेमपात्र का आलिंगन करते हैं।

लेकिन James Lange का कथन है कि हमारा रोग संचयना गलत है। हम भय लगने पर चिल्लाते या भागते नहीं हैं बल्कि सच तो यह है कि चूंकि हम चिल्लाते या भागते हैं, इसलिए भय का अनुभव करते हैं। यदि हम भागे या चिल्लाते नहीं तो हम भयभीत नहीं हैं। चूंकि हम आक्रामक करते हैं, इसलिए क्रोध का अनुभव करते हैं। इस तरह, इस सिद्धान्त के अनुसार पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है और तब उसी के अनुकूल संवेगात्मक अनुभव होता है। स्पष्टतः संवेगात्मक अनुभव व्यवहार पर निर्भर करता है। (शारीरिक क्रियाएँ बाह्य अंगों के माध्यम से)

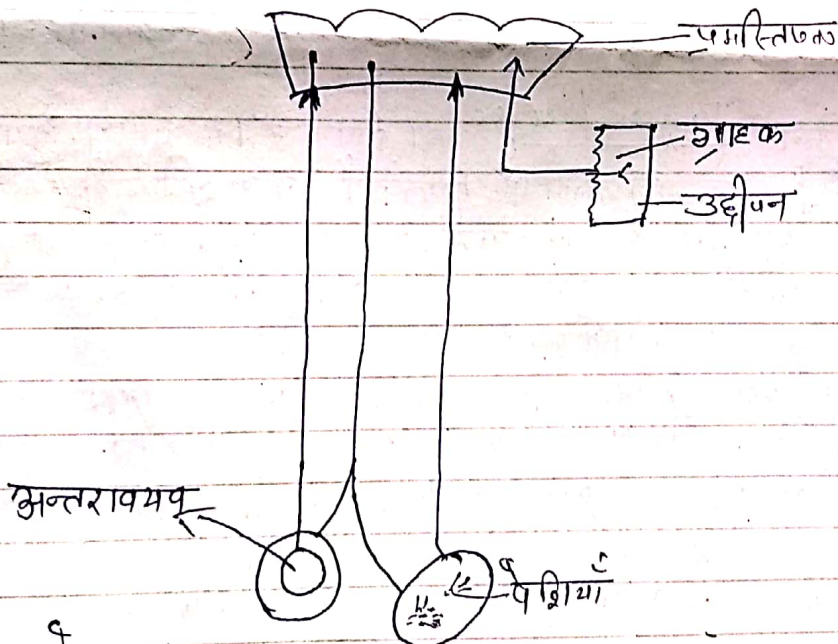
इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग का अनुभव जिन अवस्थाओं के बाद होता है उन्हें निम्नांकित क्रम में रखा गया है।

1. संवेग उत्पन्न करने वाली परिस्थिति का प्रत्यक्षानुभव
2. संवेगात्मक व्यवहार (मानसिक और बाह्य शारीरिक परिवर्तन)
3. संवेगात्मक व्यवहार का प्रत्यक्षानुभव
4. संवेगात्मक अनुभव

संवेगात्मक व्यवहार पर संवेगात्मक अनुभव निर्भर करता है। इसकी व्याख्या स्वाभाविक रूप से शारीरिक प्रक्रिया के आधार पर यह सिद्धान्त करता है, जिसमें प्रमस्तिष्क (Cerebrum) का प्रमुख रूप है। इसके अनुसार, संवेग के लिए सर्वप्रथम संवेग उत्पन्न करने वाली परिस्थिति या उद्दीपन की जानेन्द्रिय क्रिया में

तंत्रिका आवेग (nerve-impulse) उत्पन्न करता है। वह तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क में जाता है जिससे ज्ञान परिरक्षित का या उद्दीपन का प्रतिक्रिया होता है। जैसे ही यह प्रकाशन होता है वेही ही व्यक्ति कुछ न कुछ सर्वगात्मक व्यवहार (आन्तरिक में) करता है। तब पुनः प्रतिक्रियाओं और आन्तरिक ग्रहकों (interoceptors) से तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क में पहुँचता है, जिससे सर्वगात्मक व्यवहारों का उसे ज्ञान (प्रतिक्रिया) होता है। तब उसे अपने द्वारा किए गए व्यवहारों का ज्ञान होता है तब वह उनके विरोध का अनुभव करने लगता है।

अपने कर्मों की प्रत्यक्ष रिद्ध करने के लिए उस रिद्धांत के प्रतिपादकों नीजताओं के अभ्यन्त का उद्घाटन किया है। अभिनेताओं का उपयुक्त सर्वगात्मक व्यवहार (अभिनय) कर्त्तव्य समय के विरोध का अनुभव भी हो जाता है। उद्घाटनार्थः जब कोई अभिनेता प्रेम का अभिनय कर्त्तव्य समय प्रेम ही की व्यवहार (आन्तरिक परिवर्तनों) का अभिनय कर्त्ता है तब उसमें प्रेम का अनुभव भी हो जाता है इससे पता चलता है कि सर्वगात्मक अनुभव सर्वगात्मक व्यवहार पर निर्भर करता है।



आलोचना -

जेम्स लॉज सिद्धांत की व्याख्या में स्पष्ट है कि ज्ञानों की मूलभूत धारें कही गई हैं - (1) सर्वगात्मक अनुभव के संवेग में होने वाले आन्तरिक परिवर्तनों पर निर्भर करता है। (2) संवेग की उत्पत्ति में प्रमस्तिष्क का बहुत अधिक महत्व है। लेकिन आरीर विज्ञान के अनुमानों के आधार पर मनोवैज्ञानिकों और आरीर विज्ञानिकों ने इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए दोनों बातों का गलत बतलाया है। इसे स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख आलोचनाओं की चर्चा आवश्यक है -

(1) सर्वगात्मक अनुभव शारीरिक परिवर्तन पर निर्भर नहीं करता है। इसके समर्पण में सबसे बड़ा सबूत यह है कि एक ही तरह के आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन कई तरह के सर्वगों में होता है। जैसे: रक्तचाप में भी रक्तचाप, हृदय, नाड़ी आदि की गति बढ़ जाती है। अतः भ्रम तथा प्रेम में भी इनकी गति बढ़ जाती है।

उसी तरह बुद्धि तथा दुरवधानों में अस्कों से आसु निकलते हैं। यदि सर्वगों का अनुभव शारीरिक परिवर्तनों पर निर्भर करता है तो एक तरह के शारीरिक परिवर्तनों से एक ही तरह के सर्वगों का अनुभव होना चाहिए था। एक ही तरह के परिवर्तन से कई तरह के सर्वगों का अनुभव यह सिद्ध करता है कि सर्वगात्मक अनुभव शारीरिक परिवर्तनों से स्वतंत्र है।

(2) प्रयोगों से पता चलता है कि शरीर के अन्तःकरण या आन्तरिक अंग अपेक्षाकृत कम संवेदनशील हैं इसलिए आन्तरिक परिवर्तनों में कुछ समय लगता है, जबकि सर्वगों का अनुभव उनसे पहले ही हो जाता है। अनुभव है कि, सर्वगात्मक परिस्थिति के उत्पन्न होने के बाद आन्तरिक परिवर्तन होने में कम से कम एक सेकेंड्स समय लग जाता है लेकिन सर्वगात्मक अनुभव एक सेकेंड से कम में ही हो जाता है। इनसे स्पष्ट है कि सर्वगात्मक अनुभव शारीरिक परिवर्तनों के बाद नहीं बल्कि पहले होता है।

(3) यदि शारीरिक परिवर्तनों पर सर्वगात्मक अनुभव निर्भर करता तो जब भी किसी कारणवश आन्तरिक या बाह्य शारीरिक परिवर्तन होते तब सर्वगों का भी अनुभव होता, लेकिन ऐसा देरवनी में नहीं आता। वद्वेषण की पुई देन पर रक्तचाप, हृदय, नाड़ी आदि की गति में संवेध सभी आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन तो होते हैं, पर किसी तरह का सर्वगात्मक अनुभव नहीं होता। इनका अर्थ यह है कि सर्वगात्मक अनुभव शारीरिक परिवर्तन पर निर्भर नहीं करता।

Cerebral cortex
ब्रह्म

(4) कुछ प्रयोगों और अध्ययनों के द्वारा यह सिद्ध करने की कोशिश की गई है कि सर्वगों को उत्पन्न करने में प्रमस्तिष्क का कार्यकाल का हाव नहीं है। युवक उत्पन्न करने में प्रमस्तिष्क के निचले केन्द्र जैसे Subarum हाइपोथैलमस, थायलम महत्वपूर्ण हैं। इसलिए शारीरिक परिवर्तनों से उत्पन्न होने वाला आवेग के प्रमस्तिष्क के गल ब्रह्मण सर्वगात्मक अनुभव होता है।

रोरिंगटन Sherington (1900) ने अपने प्रयोगों में एक कुत्ते की गर्दन के पास की तंत्रिका काट दी जिसमें आन्तरिक अंगों से उत्पन्न होने वाला तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क में नहीं पहुंच सकता था। अतः कुत्ते का अपने शरीर के आन्तरिक परिवर्तनों का ज्ञान नहीं होता था। प्रो. स्थिति में James Lange theory के अनुसार कुत्ते को सर्वग नहीं होता-कहिए था।

4

लेकिन वह कुत्ता तंत्रिका के कट जाने पर भी प्रायः प्रौढ़, भय भ्रष्टिसभी प्रमुख संवेगों का अनुभव करता रहा।

Cannon (1929) आदिनीविल्ली पर प्रयोग करते उसी तरह का परिणाम पाया। मनुष्य पर भी उसी तरह का एकल अक्षयन हुए हैं-पालीस वर्षकी एक महिला को डेरी ली गयी उसी गर्दन के पास उनके Spinal Cord का भेग कट गया। कि भी वह संवेगों का अनुभव करती रही।

बिना: इन प्रयोगों के आधार पर James Lange Theory खरीत। गुप्त सिद्ध नहीं होता कि भी-यूँकि जेम्स ने अपने सिद्धांत में भावैक परिवर्तनों के ज्ञान पर कृत जोड़िया हैं उसलिये ये प्रयोग परिणाम इस उद्ये सिद्धांतकी कृते आलोचना प्रस्तुत करते हैं।

कि भी इस पुराने सिद्धांत का रूपना एक ~~अच्छ~~ महत्व है। अपने यह खतमाया कि वेग में (नवेगामर अनुभव को) शारीरिक परिवर्तन दोनों होते हैं। यह भाव भी मान्य है तथा विभिन्न संवेग सिद्धांत इसी आधार पर वेग की व्याख्या करते हैं।